International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 146-150

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 146-150
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-09-2019
Accepted: 15-10-2019

नारायण गुप्ता
(1) शोधच्छात्र, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
नारायण गुप्ता
(1) शोधच्छात्र, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

काशिकाके द्वितीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव–पश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु)

नारायण गुप्ता

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक 'काशिकाके द्वितीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश' है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः काशिका, अव्ययम्, विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति, शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य, सादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु, प्रक्रिया।

प्रस्तावना

प्रक्रियानिर्देश

अधिस्त्रि
लौकिक विग्रह– स्त्रीषु अधिकृत्य।
अलौकिक विग्रह– स्त्री सुप् अधि।
स्त्री सुप् अधि– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति–साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे स्त्री सुप् अधि इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे सुप् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
स्त्री अधि– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अधि इसका पूर्वनिपात हुआ–
अधि स्त्री– 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/2/47) इस सूत्रसे ई इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (इ) यह आदेश हुआ–
अधि स्त्र् इ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अधि स्त्र् इ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अधि स्त्र् इ सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अधि स्त्र् इ– अधिस्त्रि।। इति सिद्धम्।।

उपकुम्भम्
लौकिक विग्रह– कुम्भस्य समीपम्।
अलौकिक विग्रह– कुम्भ ङस् उप।
कुम्भ ङस् उप– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति–साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे कुम्भ ङस् उप इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–

उप कुम्भ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे उप कुम्भ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
उप कुम्भ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
उप कुम्भ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
उप कुम्भ् अ म्– उपकुम्भम्।। इति सिद्धम्।।

सुमद्रम्

लौकिक विग्रह– मद्राणां समृद्धिः।
अलौकिक विग्रह– मद्र आम् सु।
मद्र आम् सु– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे मद्र आम् सु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
मद्र सु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सु इसका पूर्वनिपात हुआ–
सु मद्र– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे सु मद्र इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
सु मद्र सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
सु मद्र अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
सु मद्र अ म्– सुमद्रम्।। इति सिद्धम्।।

दुर्यवनम्

लौकिक विग्रह– यवनानां व्यृद्धिः।
अलौकिक विग्रह– यवन आम् दुर्।
यवन आम् दुर्– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे यवन आम् दुर् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
यवन दुर्– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे दुर् इसका पूर्वनिपात हुआ–
दुर् यवन– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे दुर् यवन इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
दुर् यवन सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
दुर् यवन अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
दुर् यवन् अ म्– दुर्यवनम्।। इति सिद्धम्।।

निर्मक्षिकम्

लौकिक विग्रह– मक्षिकाणाम् अभावः।
अलौकिक विग्रह– मक्षिका आम् निर्।
मक्षिका आम् निर्– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे मक्षिका आम् निर् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआस–
मक्षिका निर्– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे निर् इसका पूर्वनिपात हुआ–
निर् मक्षिका– 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/2/47) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–
निर् मक्षिक् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/46) इस सूत्रसे निर् मक्षिक् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
निर् मक्षिक् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
निर् मक्षिक् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
निर् मक्षिक् अ म्– निर्मक्षिकम्।। इति सिद्धम्।।

अतिहिमम्

लौकिक विग्रह– हिमस्य अत्ययः।
अलौकिक विग्रह– हिम ङस् अति।
हिम ङस् अति– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे हिम ङस् अति इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
हिम अति– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अति इसका पूर्वनिपात हुआ–
अति हिम– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अति हिम इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अति हिम सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अति हिम अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अति हिम् अ म्– अतिहिमम्।। इति सिद्धम्।।

अतितैसृकम्

लौकिक विग्रह– तैसृकस्य असम्प्रति (सम्प्रति उपभोगकालो न भवति)।
अलौकिक विग्रह– तैसृक ङस् अति।
तैसृक ङस् अति– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे तैसृक ङस् अति इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
तैसृक अति– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अति इसका पूर्वनिपात हुआ–
अति तैसृक– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अति तैसृक इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अति तैसृक सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अति तैसृक अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अति तैसृक् अ म्– अतितैसृकम्।। इति सिद्धम्।।

इतिपाणिनि

लौकिक विग्रह– पाणिनेः (शब्दस्य) प्रादुर्भावः (पाणिनिशब्दो लोके प्रकाशते)।
अलौकिक विग्रह– पाणिनि ङस् इति।

पाणिनि ङस् इति– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे पाणिनि ङस् इति इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे घस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
पाणिनि इति– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे इति इसका पूर्वनिपात हुआ–
इति पाणिनि– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे इति पाणिनि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
इति पाणिनि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/72) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
इति पाणिनि– इतिपाणिनि।। इति सिद्धम्।।

अनुरथं पादातम्
लौकिक विग्रह– रथस्य पश्चात्।
अलौकिक विग्रह– रथ ङस् अनु।
रथ ङस् अनु– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे रथ ङस् अनु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
रथ अनु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' :' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अनु इसका पूर्वनिपात हुआ–
अनु रथ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' :' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अनु रथ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अनु रथ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अनु रथ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अनु रथ् अ म्– अनुरथम्।। इति सिद्धम्।।

अनुरूपम्
लौकिक विग्रह– रूपस्य योग्यम्।
अलौकिक विग्रह– रूप ङस् अनु।
रूप ङस् अनु– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे रूप ङस् अनु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
रूप अनु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अनु इसका पूर्वनिपात हुआ–
अनु रूप– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अनु रूप इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अनु रूप सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अनु रूप अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अनु रूप् अ म्– अनुरूपम्।। इति सिद्धम्।।

प्रत्यर्थम्
लौकिक विग्रह– अर्थम् अर्थं प्रति।
अलौकिक विग्रह– अर्थ अम् प्रति।
अर्थ अम् प्रति– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे अर्थ अम् प्रति इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे अम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अर्थ प्रति– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे प्रति इसका पूर्वनिपात हुआ–
प्रति अर्थ– 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/74) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें यण् (य्) यह आदेश हुआ–
प्रत् य् अर्थ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे प्रत् य् अर्थ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
प्रत् य् अर्थ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
प्रत् य् अर्थ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
प्रत् य् अर्थ् अ म्– प्रत्यर्थम्।। इति सिद्धम्।।

यथाशक्ति
लौकिक विग्रह– शक्तिम् अनतिक्रम्य।
अलौकिक विग्रह– शक्ति ङस् यथा।
शक्ति ङस् यथा– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे शक्ति ङस् यथा इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
शक्ति यथा– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे यथा इसका पूर्वनिपात हुआ–
यथा शक्ति– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे यथा शक्ति इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
यथा शक्ति सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
यथा शक्ति– यथाशक्ति।। इति सिद्धम्।।

अनुज्येष्ठं प्रविशन्तु भवन्तः
लौकिक विग्रह– ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण।
अलौकिक विग्रह– ज्येष्ठ ङस् अनु।
ज्येष्ठ ङस् अनु– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रासे ज्येष्ठ ङस् अनु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
ज्येष्ठ अनु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अनु इसका पूर्वनिपात हुआ–
अनु ज्येष्ठ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अनु ज्येष्ठ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अनु ज्येष्ठ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अनु ज्येष्ठ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अनु ज्येष्ठ् अ म्– अनुज्येष्ठम्।। इति सिद्धम्।।

सचक्रं धेहि
लौकिक विग्रह– चक्रेण युगपत्।
अलौकिक विग्रह– चक्र टा सह।
चक्र टा सह– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानु पूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे चक्र टा सह इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई।

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
चक्र सह– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सह इसका पूर्वनिपात हुआ–
सह चक्र– 'अव्ययीभावे चाकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/80) इस सूत्रसे सह इसके स्थानमें स यह आदेश हुआ–
स चक्र– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स चक्र इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
स चक्र सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
स चक्र अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
स चक्र् अ म्– सचक्रम्।। इति सिद्धम्।।
सकिखि
लौकिक विग्रह– सदृशः किख्या।
अलौकिक विग्रह– किखि टा सह।
किखि टा सह– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे किखि टा सह इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
किखि सह– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सह इसका पूर्वनिपात हुआ–
सह किखि– 'अव्ययीभावे चाकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/80) इस सूत्रसे सह इसके स्थानमें स यह आदेश हुआ–
स किखि– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स किखि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
स किखि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
स किखि– सकिखि।। इति सिद्धम्।।
सक्षत्रं शालङ्कायनानाम्
लौकिक विग्रह– क्षत्राणां सम्पत्तिः (अनुरूप आत्मभावः)।
अलौकिक विग्रह– क्षत्र भिस् सह।
क्षत्र भिस् सह– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे क्षत्र भिस् सह इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे भिस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
क्षत्र सह– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सह इसका पूर्वनिपात हुआ–
सह क्षत्र– 'अव्ययीभावे चाकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/80) इस सूत्रसे सह इसके स्थानमें स यह आदेश हुआ–
स क्षत्र– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स क्षत्र इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
स क्षत्र सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
स क्षत्र अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
स क्षत्र् अ म्– सक्षत्रम्।। इति सिद्धम्।।
सतृणम् अभ्यवहरति
लौकिक विग्रह– तृणस्य साकल्यम् (न किञ्चिदभ्यवहार्यं परित्यजति)।
अलौकिक विग्रह– तृण टा सह।
तृण टा सह– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे तृण टा सह इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
तृण सह– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सह इसका पूर्वनिपात हुआ–
सह तृण– 'अव्ययीभावे चाकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/80) इस सूत्रसे सह इसके स्थानमें स यह आदेश हुआ–
स तृण– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स तृण इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
स तृण सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
स तृण अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
स तृण् अ म्– सतृणम्।। इति सिद्धम्।।
साग्नि
लौकिक विग्रह– अग्नेः अन्तवचनम् (अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते)।
अलौकिक विग्रह– अग्नि टा सह।
अग्नि टा सह– 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्ति– साकल्यान्तवचनेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/1/6) इस सूत्रसे अग्नि टा सह इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अग्नि सह– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सह इसका पूर्वनिपात हुआ–
सह अग्नि– 'अव्ययीभावे चाकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/3/80) इस सूत्रसे सह इसके स्थानमें स यह आदेश हुआ–
स अग्नि– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–
स् आ ग्नि– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स् आ ग्नि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
स् आ ग्नि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
स् आ ग्नि– साग्नि।। इति सिद्धम्।।

संदर्भ

1. अष्टाध्यायीसूत्रापाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।

6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।